Anveshan (अन्वेषण): A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 2, Issue 1 – 2018

स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारों का व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव

अमृत लाल जीनगर*, योगेश चन्द्र जोशी**

शोध सार (Abstract)

स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारों में भारत के आध्यात्मिक भण्डार का सारतत्त्व समाहित है, जिसे उन्होंने आधुनिक परिप्रेक्ष्य में वैज्ञानिक आधार पर सहज–सरल शब्दों में हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है। ये सभी विश्वमानवता के लिए प्रेरणादायी है। समाज के सभी वर्ग सभी धर्म एवं सभी जातियों के लिए समान रूप से उपयोगी हैं। स्वामीजी की शक्तिशाली प्रोत्साहक वाणी लोगों के मन को जगाने वाली है। उनके शैक्षिक विचार आत्मविश्वास एवं जीवन की समस्याओं का सामना करने की शक्ति प्रदान करने वाले तथा लोगों के हृदय में प्रेम एवं सेवाभाव उत्पन्न करने वाले, हमेशा नैतिक मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्रदान करने वाले, जीवन की कठिनाइयों और अनिश्चितता के समय सही मार्गदर्शन करने वाले है, जिनका हमारे व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव पड़ता है। स्पष्टः स्वामीजी ने सैद्धान्तिक शिक्षा की जगह व्यवहारिक शिक्षा पर अधिक बल दिया है।

शब्दकुंजी– भारतीय, व्यक्तित्व, मस्तिष्क, जीवन, नैतिक, शिक्षा।

प्राचीनकाल से ही भारत में शिक्षा ही एकमात्र व्यक्तित्व विकास का स्त्रोत रहा है। सदियों से चली आ रही व्यक्तित्व विकास की इस परम्परा ने ऐसे 'भारतीय व्यक्तित्व' को जन्म दिया है, जिसे न तो 'आर्य' जाति की संज्ञा दी जा सकती है और न 'अनार्य' जाति की। यह व्यक्तित्व बना है सदियों से साथ–साथ रहने वाले आर्य, द्रविड़, किरात, निषाद आदि जातियों के मेल–मिलाप से, उनके सांस्कृतिक गुणों, भाषाई लक्षणों के अभिसारण और समीकरण की प्रक्रिया से।

कोई व्यक्ति कैसा आचरण करता है, महसूस करता है और सोचता हैं किसी विशेष परिस्थिति में वह कैसा व्यवहार करता है यह कॉफी कुछ मानसिक संरचना पर निर्भर करता है। किसी व्यक्ति की केवल बाह्य आकृति या उसकी बातें या चाल–ढाल उसके व्यक्तित्व के केवल छोर भर होते है। ये उसके सच्चे व्यक्तित्व को प्रकट नहीं करते। व्यक्तित्व का विकास वस्तुतः व्यक्ति के गहन स्तरों से संबंधित है। अतः मन तथा उसकी क्रियाविधि के बारे में स्पष्ट समझ से ही हमारे व्यक्तित्व का अध्ययन प्रारंभ होना चाहिए।

हम जानते है कि शुद्ध रक्त रखने वाले आर्य 'हवन संस्कृति' और वर्णाश्रम व्यवस्था के सम्पर्क में थे। 'पूजा संस्कृति' द्रविड़ों की थी। अतः पत्र–पुष्प, नारियल–अच्छत का विधान उनका था।

*शोधार्थी, हिन्दी विभाग, माधव विश्वविद्यालय, पिण्डवाड़ा, सिरोही (राज.)
**सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, माधव विश्वविद्यालय, पिण्डवाड़ा, सिरोही (राज.)
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-4044**

यह अभिसारण प्रक्रिया का ही परिणाम कहा जा सकता है कि चाहे उत्तर में बसने वाला तथाकथित आर्य वंशज हो अथवा दक्षिण में बसने वाला द्रविड़ कुल। उसके सामान्य आचरण में 'हवन' और 'पूजा' या फिर 'वर्ण व्यवस्था' समान भाव से फलित दिखाई पड़ती है। स्पष्ट है कि संस्कृतियों के अनुकूलन और अभिसरण की जिस प्रक्रिया से भारतीय समाज गुजरता रहा है, 'भारतीय व्यक्तित्व' उसी का परिणाम कहा जा सकता है। यह उसके समग्र व्यक्तित्व का ही फल था कि भक्ति आंदोलन से संबंद्ध दक्षिण के आचार्यों की मातृभाषा, द्रविड़ कुल की थी, पुनर्जागरण और जन–सम्पर्क की उनकी भाषा ब्रज थी और तत्त्वचिंतन तथा दर्शन की भाषा संस्कृत थी। इन भाषाओं के प्रयोजनधर्मी तंतुओं के माध्यम से ही उनका व्यक्तित्व निर्मित हुआ था। महान दार्शनिक प्लेटो के अनुसार– 'व्यक्तित्व का विकास ही शिक्षा का उद्देश्य है।'[1]

शिक्षा, मानव की आंतरिक क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व को विकसित करने की प्रक्रिया है। शिक्षा मानव को समाज में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए समाजिकृत करती है तथा एक उत्तरदायी नागरिक एवं समाज का सक्रिय सदस्य बनाने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है। समाजीकरण की प्रक्रिया के अंग के रूप में यह नए सदस्यों के मन में समाज की सांस्कृतिक विरासत मानकों एवं मूल्यों को आत्मसात कराती है। यह प्रारंभिक तथा अनौपचारिक प्रक्रिया है। जिसके अंतर्गत एक व्यक्ति दूसरे की सामाजिक अपेक्षाओं के अनुरूप अपने व्यवहारों को ढालाता है।

शिक्षा का सबसे बड़ा आदर्श मानव व्यक्तित्व का विकास है। इसके लिए शिक्षक को उन सिद्धान्तों और नियमों को भली–भाँति समझना चाहिए, जिनके द्वारा मानव व्यक्तित्व का विकास हो सके। यही सबसे बडी व्यवहारिक वस्तु है, और यही सम्पूर्ण शिक्षा का रहस्य है। स्वामीजी के लिए निर्भिकता और शक्ति ही मानव व्यक्तित्व के विशिष्ट लक्षण है। उनका मानना है कि शक्ति में अच्छाई है तथा कमजोरी में पाप है।[2]

स्वामी विवेकानंद के मतानुसार–'शिक्षा का मूल कार्य ऐसा प्रशिक्षण प्रदान करना है, जिसके द्वारा इच्छा शक्ति का प्रवाह और अभिव्यक्ति को नियंत्रण में लाया जा सकता है, जिससे समाज कल्याण संभव है।' शिक्षा का अर्थ स्पष्ट करते हुए स्वामी जी कहते है कि 'जिस शिक्षा से हम अपना जीवन निर्माण कर सके, मनुष्य बन सके, वही वास्तव में शिक्षित कहलाने योग्य है।'[3] यदि हम शिक्षा को व्यक्तित्व परिवर्तन का सबसे शक्तिशाली साधन मानें तो यह स्वामी विवेकानंद के 'शैक्षिक दर्शन' की महत्त्वपूर्ण देन है। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ के अनुसार–'यदि कोई भारत की आत्मा को समझना चाहता है तो उसे स्वामी विवेकानंद के 'जीवन दर्शन' का अध्ययन करना अति आवश्यक है।'

स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारों में भारत के आध्यात्मिक भण्डार का सारतत्त्व समाहित है, जिसे उन्होंने आधुनिक परिप्रेक्ष्य में वैज्ञानिक आधार पर सहज–सरल शब्दों में हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है। ये सभी विश्वमानवता के लिए प्रेरणादायी है। समाज के सभी वर्ग सभी धर्म एवं सभी जातियों के लिए समान रूप से उपयोगी हैं। स्वामीजी की शक्तिशाली प्रोत्साहक वाणी लोगों के मन को जगानें वाली है। उनके शैक्षिक विचार आत्मविश्वास एवं जीवन की समस्याओं का सामना करने की शक्ति प्रदान करने वाले तथा लोगों के हृदय में प्रेम एवं सेवाभाव उत्पन्न करने वाले, हमेशा नैतिक मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्रदान करने वाले, जीवन की कठिनाइयों और

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

अनिश्चितता के समय सही मार्गदर्शन करने वाले है, जिनका हमारे व्यक्तित्व विकास पर अच्छा प्रभाव पडता है।

शिक्षा की परिभाषा स्पष्ट करते हुए स्वामीजी कहते है 'जिस संयम के द्वारा इच्छा शक्ति का प्रवाह और विकास हमारे वश में लाया जाता है और वह फलदायक होता है, वह शिक्षा कहलाती है।'[4] शैक्षिक विचारों के क्षेत्र में स्वामी विवेकानंद की देन, विभिन्नता और संख्या की दृष्टि से असीम है। उनके शैक्षिक विचारों का विस्तार और गहनता इस पृष्ठभूमि से भी आँकी जा सकती है कि उन्होंने वेद, पुराण, उपनिषद, रामायण, महाभारत, भगवदगीता, बाइबल तथा कुरान की शिक्षा को गुरूकृपा और सतत साधना से आत्मसात कर लिया था।

स्वामीजी तत्त्कालीन भारतीय शिक्षा प्रणाली की आलोचना करते रहे है। वह व्यवहारिक शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। प्रचलित शिक्षा के स्थान पर स्वामीजी भारत के लिए जिस प्रकार की शिक्षा चाहते थे इस संबंध में उन्होंने कहा है कि 'हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है, जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है, बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा होता है।'

स्पष्ट: स्वामीजी ने सैद्धान्तिक शिक्षा की जगह व्यवहारिक शिक्षा पर अधिक बल दिया है।

शिक्षक का समाज में क्या स्थान होना चाहिए और उनका शिक्षा के प्रति क्या कर्तव्य है, इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए स्वामी विवेकानंद जी कहते है–'वास्तव में, किसी को किसी के द्वारा कभी शिक्षा नहीं दी गई हैं, हम में से प्रत्येक को अपने आपको शिक्षा देनी पड़ती है। बाह्य शिक्षक केवल ऐसे सुझाव देता है, जिनसे आत्मा कार्य करने और समझने के लिए चैतन्य हो जाती है।'[5]

शिक्षक के व्यक्तित्व जीवन के बिना कोई शिक्षा संभव नहीं है। स्वामीजी के अनुसार शिक्षा की वास्तविक प्रकृति यही है कि विचारों को व्यवहारिक रूप दिया जाए और तथ्यों को रटकर भण्डार करना नहीं चाहिए। वे कहते है–पुस्तके निरर्थक है, जब तक हमारी पुस्तक नहीं खुलती, तब शेष अन्य पुस्तकें भी अच्छी हैं, जहाँ तक वह हमारी पुस्तक से सामंजस्य स्थापित करती है। कोई किसी को नही पढ़ाता।

स्वामीजी के अनुसार–'शिक्षक की कितनी सूचना हमारे मस्तिष्क में एकत्रित है और वहीं वह बिना जीवन का भाग बनाए, उथल–पुथल मचाती रहे, यही नहीं है, हमारे भीतर जीवन निर्माण करने वाले, मानव निर्माण करने वाले, चरित्र निर्माण करने वाले, जितने भी विचार है, उन्हें आत्मसात करना ही शिक्षा है।

शिक्षा द्वारा मानव की दिव्यता प्रकट होनी चाहिए। स्वामीजी चाहते थे कि शिक्षा द्वारा सृजनात्मकता, मौलिकता और श्रेष्ठता पर बल दिया जाना चाहिए। उनके अनुसार अच्छी शिक्षा वही है, जिसके द्वारा मानव की अन्तरनिहित शक्तियों का प्रकटीकरण हो सके। सच्ची शिक्षा विनम्रता की भावना का पोषण करती है। विनम्रता की भावना ही मानव चरित्र का आधार है, वही सन्तुलित व्यक्तित्व का मापदण्ड भी है।[6] अत: स्वामी जी बताया है कि प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति का आदर्श, पूर्ण–निस्वार्थ भावना वाला होना चाहिए। बिना त्याग के कोई महान कार्य नही हो सकता। जिस व्यक्ति ने मन पर स्वामित्त्व स्थापित कर लिया, वही आदर्श पुरुष है, वही वास्तविक शिक्षित व्यक्ति है।

स्वामी अदीश्वरानंद ने अपने एक लेख में विवेकानंद के व्यक्तित्व और विचारों का

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

शिकागो में हुई संसद पर प्रभाव का जिक्र किया है। अदीश्वरानंद ने लिखा है कि–विवेकानंद ने अपने विचारों से अमेरिका के लोगों के दिल को छू लिया था। उन्होंने अपनी जादुई भाषणशैली, रूहानी आवाज और क्रांतीकारी एवं शैक्षिक विचारों से अमेरिका के आध्यात्मिक विकास पर गहरी छाप छोड़ी।

श्रीमदभगवद्गीता में बताया गया है कि–'असंयमित मन एक शत्रु के समान और संयमित मन हमारे मित्र के समान आचरण करता है।'[7] अतः हमें अपने मन की प्रक्रिया के विषय में एक स्पष्ट धारणा रखने की आवश्यकता है। क्या हम इसे अपने आज्ञा–पालन में, अपने साथ सहयोग करने में, प्रशिक्षित करने में कर सकते है? किस प्रकार यह हमारे व्यक्तित्व के विकास में योगदान कर सकता है। ?

अपनी ओजपूर्ण आवाज से लोगों के दिल को छू लेने वाले स्वामी विवेकानंद निःसंदेह विश्व गुरू थे। जिनके सुलझे हुए विचारों के प्रकाश ने धर्म की राह से भटक रही दुनिया को सही पथ दिखाया। निर्विवाद रूप से विश्व में हिन्दुत्त्व के ध्वजाहक रहे विवेकानंद का बौद्धिक तथा आध्यात्मिक शक्ति से भरा व्यक्तित्व और कृतित्व विशेषकर भारतीयों लिए प्रेरणा का स्त्रोत है।

व्यक्तित्व क्या है ?

अंगेजी के केम्ब्रिज अन्तरराष्ट्रीय शब्दकोश के अनुसार हम जिस प्रकार के व्यक्ति है, वही हमारा व्यक्तित्व है और वह हमारे आचरण, संवेदनशीलता तथा विचारों से व्यक्त होता है। 'लांगमैन' के शब्दकोश के अनुसार–'किसी व्यक्ति का पूरा स्वभाव तथा चरित्र ही व्यक्तित्व कहलाता है।'[8]

मानव मन की चार मूलभत क्रियाएं है, जो इस प्रकार है–

स्मृति

स्मृतियों का सचय तथा हमारे पूर्व अनुभूतियों के संस्कार हमारे मन के समक्ष विभिन्न सम्भावनाएं प्रस्तुत करते है। यह संचय चित्त कहलाता है। इसी में हमारें भले–बुरे सभी प्रकार के विचारों तथा क्रियाओं का संचयन होता है। इन संस्कारों का कुल योग ही चरित्र का निर्धारण करता है। यह चित्त ही अवचेतन मन कहलाता है।

सोचने की क्रिया तथा कल्पना शक्ति

मानव मन कुछ निश्चित न कर अपने सामने उपस्थित अनेक विकल्पों का परीक्षण करता है। यह कई चीजों पर विचार करता हैं। मन की यह क्रिया मानस कहलाती है। कल्पना तथा धारणाओं का निर्माण भी मानस की ही क्रिया है।

निश्चय करना तथा निर्णय लेना

बुद्धि ही वह शक्ति है, जो निर्णय लेने में उत्तरदायी है। इसमें सभी चीजों के भले–बुरे पक्षों पर विचार करके वांछनीय क्या है, यह जानने की क्षमता होती है। यह मनुष्य में निहित विवेक की शक्ति भी है, जो उसे भला क्या है तथा बुरा क्या है। करणीय क्या है तथा अकरणीय क्या है। उचित क्या है तथा अनुचित क्या है। इसका विचार करने की क्षमता प्रदान करती है। यह इच्छा शक्ति का भी स्थान है, जो व्यक्तित्व–विकास के लिए अति आवश्यक है, अतः मन का यह पक्ष हमारे लिए सर्वाधिक महत्त्व का है।

अहं का बोध

सभी शारीरिक तथा मानसिक क्रियाओं को स्वयं में आरोपित करके–मैं खाता हूँ, मैं देखता हूँ, मैं सूनता हूँ, मैं सोचता हूँ, मैं द्विधाग्रस्त होता हूँ, आदि इसी को अहंकार या मैं–बोध कहते हैं। जब तक यह 'मैं'

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

स्वयं को असंयमित देह मन से जोड़ लेता है, तब तक मानव जीवन इस संसार की घटनाओं तथा परिस्थितियों से परिचालित होता है।

भारतीय शिक्षादृष्टि से पता चलता है कि स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारों का भारतीयों के व्यक्तित्व विकास पर काफी प्रभाव पड़ा है। स्मृति, सोचने को क्रिया तथा कल्पना शक्ति, निश्चय करना तथा निर्णय लेना, अहं का बोध ये चारें क्रियाए मानव मन की मूलभूत क्रियाएं है, ये क्रियाए मानव के व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करती है। शैक्षिक विचार, व्यक्तित्व विकास से जुड़ी मन की एक महत्त्वपूर्ण क्रिया है। अतः हमारी भावनाएं जितनी ही संयमित होगी, व्यक्ति का व्यक्तित्व भी उतना ही चमकीला, स्वस्थ, उत्कृष्ट, एवं तेजोमय होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. विजेन्द्र कुमार वशिष्ठ, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2005.
[2]. सम्पूर्ण विवेकानंद साहित्य, भाग तृतीय पृ.–16.
[3]. विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन–महेश शर्मा, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013.
[4]. वही।
[5]. सम्पूर्ण विवेकानंद साहित्य, चतुर्थ पृ. –22–23.
[6]. वही, भाग तृतीय पृ.–302.
[7]. गीता, 6/5–6.
[8]. व्यक्तित्व का विकास–स्वामी विवेकानंद, रामकृष्ण मठ, मैसूर, प्रथम संस्करण।
[9]. आधुनिक भारत में शैक्षिक चिंतन–हरेराम जसटा, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली।
[10]. भाषाई स्मिथा और हिन्दी–डॉ. रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव।
[11]. भारतीय शिक्षा का इतिहास–शंकर विजयवर्गीय, राजपाल एंड सन्स, दिल्ली, 2005.
[12]. मानव शिक्षा दर्शन एवं शैक्षिक समाजशास्त्र–हरिवंश तरुण, प्रकाशन संस्थान, 2006, पृ.–267.
[13]. http://www.prabhasakshi.com/news/personality (Online).

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044